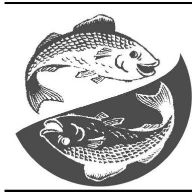
सरिता

जगदीश प्रसाद मण्डल



श्रुति प्रकाशन
दिल्ली

ISBN : ९७८-९३-८०५३८-९५-६

दाम : १५० रू. मात्र

पहिल संस्करण : २०१३

गाम-पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी
मिथिला, बिहार
पिन- ८४७४१०
मोबाइल- ९९३१६५४७४२

श्रुति प्रकाशन
रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.
दूरभाष- (०११) २५८८६६५६-५७ फैक्स- (०११) २५८८६६५८
Website:http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com
Printed at: Ajay Arts, Delhi-110002

Typeset by Sh. Umesh Mandal

Distributor :
Pallavi Distributors, Ward no- 6, Nirmali (Supaul),
मो.- 09572450405, 09931654742

Sarita : Anthology of Maithili Geet by Jagdish Prasad Mandal.



परिचए-पात : जगदीश प्रसाद मण्डल

जन्म : ५ जुलाइ १९४७ ई.मे

पिताक नाओं : स्व. दल्लू मण्डल।

माताक नाओं : स्व. मकोबती देवी।

पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।

पुत्र : सुरेश मण्डल, उमेश मण्डल, मिथिलेश मण्डल।

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा।

मूलगाम : बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला-मधुबनी, (बिहार) पिन- ८४७४१०

मोबाइल : ०९९३१६५४७४२, ०९५७०९३८६११, ०९९३१७०६५३१

ई-पत्र : jpmandal.berma@gmail.com

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी आ राजनीति शास्त्र) मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर साहित्यमे मनुखक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि।

सम्मान : गामक जिनगी लघुकथा संग्रह लेल विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११क मूल पुरस्कार आ टैगोर साहित्य सम्मान २०११; तथा समग्र योगदान लेल वैदेही सम्मान- २०१२; एवं बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह ''तरेगन'' लेल ''बाल साहित्य विदेह सम्मान'' २०१२ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार रूपेँ प्रसिद्ध) प्राप्त।

साहित्यिक कृति :

उपन्यास : (१) मौलाइल गाछक फूल (२००९), (२) उत्थान-पतन (२००९), (३) जिनगीक जीत (२००९), (४) जीवन-मरण (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (५) जीवन संघर्ष (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (६) नै धाड़ैए (२०१३ ई.मे) प्रकाशित। (७) सधबा-विधवा, (८) बड़की बहिन तथा (९) भादवक आठ अन्हार शीघ्र प्रकाश्य।

नाटक : (१) मिथिलाक बेटी (२००९), (२) कम्प्रोमाइज (२०१३), (३) झमेलिया बिआह (२०१३), (४) रत्नाकर डकैत (२०१३), (५) स्वयंवर (२०१३ ई.मे) प्रकाशित।

लघु कथा संग्रह : (१) गामक जिनगी (२००९), (२) अर्द्धांगिनी (२०१३), (३) सतभैंया पोखरि (२०१३), (४) उलबा चाउर (२०१३), (५) भकमोड़ (२०१३ ई.मे)

विहनि कथा संग्रह : (१) तरेगन (बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह। पहिल संस्करण-२०१० तथा दोसर २०१३), (२) बजन्ता-बुझन्ता (२०१३ ई.मे)

एकांकी संग्रह : (१) पंचवटी (२०१३ ई.मे)

दीर्घ कथा संग्रह : (१) शंभुदास (२०१३ ई.मे)

कविता संग्रह : (१) इंद्रधनुषी अकास (२०१३), (२) राति-दिन (२०१३), (३) सतबेध (२०१३ ई.मे)

गीत संग्रह : (१) गीतांजलि (२०१३), (२) तीन जेठ एगारहम माघ (२०१३), (३) सरिता (२०१३), (४) सुखाएल पोखरिक जाइठ (२०१३ ई.मे)

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फुलवाड़ी लगौनिहारकेँ
समरपित...

एकसत्तरि-

परदेश जेतै ......
ओज ओझरी ......
पानि बीच ......
बंसी धार ......
जीबठ बान्हि ......
राति-दिन ......
तेहरौनी ......
गेल उमरिया ......
कर-करनाम ......
मनुख कहाँ ......
चान कौसिकीय ......
घट-घट ......
ओल ओड़ि ......
निरजन वन ......
हरबाह ......
हर हलक ......
सालक विदाइ ......
मोनि मन ......
सेड़ाइते ......
दिन-रातिक ......
अबिते आँगन ......
समाज सजल ......
सभ मिलि ......
सोच सकार ......
अबिते अगहन ......
उपजल खेत ......

धूल चरण	......
उनटन	......
जान विचार	......
चालनि-सूप	......
मरम देखि	......
वेद-भेद	......
भक-इजोतमे	......
जेठुआ गरे	......
निर्जन वन	......
छगुन्तामे पड़ल छी	......
सुआगत की लए	......
सुआगत अपनेक	......
वृद्ध केना	......
समए केर	......
भगवती गीत	......
आनक बोझ	......
अड़कन-मरकन	......
हाल-बेहाल	......
आजादीक उमंग	......
बुधिए भोतिया	......
घर-घरा	......
जा बौआ	......
लत-लत लत्ती	......
पीड़ित रीति	......
अकार-सकार	......
मंगनी-चंगनी	......
आन्ही-अन्हर	......
सुफल काज	......

परदेश जेतै.....

भैया यौ, परदेश जेतै।
नै छै लज्जति गाम-घरमे
नै छै चालि-बेवहारमे।
बोली-वाणी एकोमे नै छै
नै छै आसे-बिसवासमे।
अहीं कहू भाय, केना कऽ रहतै
भैया यौ, परदेश जेतै।

मर्त बनि भूमि मर्द जखने
धड़ि धड़ लज पट-पेटमे।
हंस-हँसि हीं-हीं हिया-हिया
कू-लजति सू रणक्षेत्रमे।
अहीं कहू भाय, केना कऽ जेतै
भैया यौ, परदेश जेतै।

छेलै भूमि कहियो भूमा सन
बास-सुबास सजैत छेलै
देव-दानव मानव बनि-बनि
अरूप-सरूप बनैत गेलै।
अहीं कहू भाय, केना कऽ टिकटै
भैया यौ, परदेश जेतै।

दूर बसि दुर्वासा देखि-देखि
ललकारी ललकारि भरै छै।
दूर देश दुर-दुर दुरदुरा
अपन पौरुष पाबि कहै छै।
अहीं कहू भाय, दम केना कऽ अँटतै
भैया यौ, परदेश जेतै।

कमल सगर किलकारी भरि-भरि
बेथा-कथा हेल-हेल कहै छै।
भूम-कुभूम भूमहुर बनि-बनि
त्राहि-माम कंश कृष्ण कहै छै।

अहीं कहू भाय, किए कऽ जेतै
किए जेतै, किए ने जेतइ।
अहीं कहू भाय, केना नै लीबतै
भैया यौ, परदेश जेतै।

आन अपन अपना-अपना
मद बोतल-शीशी भरै छै।
पीविते मद मदहोश बनि-बनि
चीन-पहचीन बिसरए लगै छै।
अहीं कहू भाय, बिसरल मन केना कऽ पड़तै
भैया यौ, परदेश जेतै।

घोड़ा-हाथी, ऊँट बनि-बनि
रह-राही रणबास चलै छै।
योद्धा-युद्ध सरसिज सिरजि
वीरभूम नाओं धड़बए लगै छै।
अहीं कहू भाय, किए ने रहतै
नै यौ भैया, जेबे करतै, जेबे करतै।
❍

ओज ओझरी.....

ओज ओझर सोझ सोझड़ै
पछुआ पोझर पोझ पकड़लक।
ओज-सोझ सोझर करैमे
सोझर सोझ पोझर पकड़लक।
सोझर सोझ पोझर पकड़लक
पछुआ पोझर...।

घीचि-घीचि पछुआ पक-पकड़ि
चढ़ि टिकासन बासन बनौलक
कखनो मुहगर कखनो चीत
चालि चलि सिंघासन मारलक।
चालि चलि सिंघासन मारलक।
पछुआ पोझर...।

पोझरी ओझरी बनि विगड़ि
सोझरी बाट सोझा भगौलक।
छाती हाथ धड़ धक-धकेलि
पोझर-सोझर सरसिज भगौलक।
पोझर-सोझर सरसिज भगौलक।
पछुआ पोझर...।

अपने रोपल गाछी भुताइ
आकि पोखरि नाओं चढ़ौलक
पोखरि भुताइ आकि गाछी
मन मंदिर बिस बैस कहलक।
मन मंदिर बिस बैस कहलक।
पछुआ पोझर...।
❍

पानि बीच......

पानि बीच समुद्र बसल छै
आकि समुद्र पानि कहबै छै?
सजि-सजि साजि सरोवरो-झीलो
तहिना संग सगरो सजबै छै।
पानि-बीच समुद्र बसल छै
आकि समुद्र पानि कहबै छै।

बनि धुआ धुधकारि बनि-बनि
अकास नील सजबए लगै छै।
धड़-धड़ि धार धड़ि-धड़ि धरती
कमल नील खिलबए लगै छै।
पानि बीच...।

बूने-बून बड़-बड़ बनि-बनि
धड़ धरती धन राशि धड़ै छै।
दस दुआरि लक्ष्मी बनि-बनि
अकास-पताल बखार बनै छै।
पानि बीच...।

मन मण्डल धनमण्डल बनि-बनि
ही पत ही अकसि खसै छै।
मह-महा महि-महि मुखमण्डल
मक्खन बनि अमृत बसै छै।
पानि बीच...।

कखनो मधु कटि कट कखनो
नम-नम नाम धड़बए लगै छै।
चढ़ि अकास अकैस झकैस
धड़-धरती धन राशि धड़ै छै।
पानि बीच...।

सुवास-अकास मह महा-महा
सिज-सिर समर सजबए लगै छै।

जन-जनि जननी कहि
आकस गनजन करए लगै छै।
अकास गनजन करए लगै छै।
पानि बीच...।

जूही-बेली संग सहेली
सहलि सहला रस भरै छै।
बनिते रस-रस रसिया
लटपट-खटपट करए लगै छै।
लटपट-खटपट करए लगै छै।
पानि बीच...।

एबा-जेबा बाट बनि-बनि
गंग अकास बहए लगै छै।
धड़-धड़ा धरती धरि-सजि
नाभि कमल खिलबए लगै छै।
पानि बीच...।

नरम-गरम सरम बनि-बनि
सिंगार सजि सिर चलए लगै छै
पेब प्रेम पहिया प्रसून बनि
प्रेम रस भक्त पबए लगै छै।
पानि बीच...।
❍

बंसी धार......

किनहरि बैसि कन्ह-कन्हुआ
बंसी धार लगौने छिऐ।
चेल्हबा-पोठी बोर बना
रेहुक सिरा सजौने छिऐ।
रेहुक सिरा सजौने छिऐ।
बंसी धार...।

लहकि-लहकि लहकी लहका
घिड़नी चाइल धड़ौने छिऐ
धारे बीच खेल खेला खेलारी
हेला हेल हेलौने छिऐ।
हेला हेल हेलौने छिऐ।
बंसी धार...।

बिनु छिपे छीप छीप-छीप
उनटा पट पटकने छिऐ।
पुछड़ी-पूछ पकड़ि-पकड़ि
हरदा-हरदी लगौने छिऐ।
हरदा-हरदी लगौने छिऐ।
बंसी धार...।

सुआद-कुआद बुझने बिना
जिनगी धार धरौने छिऐ
हारि थाकि मन मारि-मारि
अस्त-उदय देखौने छिऐ।
अस्त-उदय देखौने छिऐ।
बंसी धार...।


जीबठ बान्हि......

जीबठ बान्हि जिनगी जखन
आगू डेग उठबए लगै छै।
धड़ धरती अस-असा अकास
सहर सिहरि डोलए लगै छै।
सहर-सिहरि डोलए लगै छै।
आगू डेग...।

वायुमण्डल बन वाय जेना
तहिना जिनगी जीब बनै छै।
आनन-कानन बीचे बीच
जीवन-धार बहैत रहै छै।
जीवन-धार बहैत रहै छै।
आगू डेग...।

मृत भूमि अमृत बनाबए
अगुआ डेग उठए लगै छै।
पछुआ पछ पछाड़ि-पछाड़ि
हीय हृदए मढ़ए लगै छै।
हीय हृदए मढ़ए लगै छै।
जीबठ बान्हि...।

मढ़िते हीर हृदए जखनि
सीर-सिर, सीर-सिर बढ़ए लगै छै।
पबैत पुन्ज परकाश जखनि
पुष्प कमल सजबए लगै छै।
पुष्प कमल सजबए लगै छै।
जीबठ बान्हि...।

लतरि लता लट लटैक
जन-जनक फुलवाड़ि बनै छै।
नित्या-नन्द संग-संग सीता
जानकी जनक कहबए लगै छै।
जानकी जनक कहबए लगै छै।

जानकी जनक...।

बिनु जिनगानी जिनगी ओहने
बिनु तार तरमण्डल कहै छै।
एकतारा कखनो सितार बनि
पौरुष बुद्ध लहरए लगै छै।
पौरुष बुद्ध लहरए लगै छै।
जीबठ बान्हि...।


राति-दिन......

लगल पाँति पतिआनी गढ़ि-गढ़ि
राति-दिन बिचड़ैत रहै छै।
भद्र-भद्रता तँ यएह ने भेल
मरि मुँह कुहरैत रहै छी।
मारि मरि मन कुहरैत रहै छी।
राति-दिन...।

करनी-धरनी बढ़नी बनि-बनि
घटनी-बढ़नी कहैत रहै छै।
कोइली बोल ककह ककैह
मुँह बाझ अमरीत घोड़ै छी।
मुँह बाझ अमरीत घोड़ै छी।
राति-दिन...।

बनि माली थल-मैल मैल
मृत सिंगार सजबए लगै छी।
मुँह देखि मुंगबा बिलहि
बाड़ी सिर सजबए लगै छै।
बाड़ी सिर सजबए लगै छै।
राति-दिन...।

फुइस-फटक फटकि-फटकि
अनिष्ट-इष्ट कहैत रहै छै।
भूख मन भूक-भूक भूका
सजि मन सिर सजबए लगै छै।
सजि मन सिर सजबए लगै छै।
राति-दिन...।
❍

तेहरौनी......

तेहरौनी जोत-इजोत पाबि
उठा हाथ छह चास कहै छै।
पबिते हर हरहरा हरहरा
रूप सिंगार परकीत कहै छै।
रूप सिंगार परकीत कहै छै।
तेहरौनी...।

असिया आस आस असिया
सजि सेज श्रृंग शेर कहै छै।
पबिते पौरुष प्रकृति प्रेम
भजन भक्त भजि-भजि कहै छै।
भजन भक्त भजि-भजि कहै छै।
तेहरौनी...।

रूप बहुरूप सरूप गढ़ि-गढ़ि
साले-साल उसरैत कहै छै।
अहिना आगू असिया-असिया
चौसठि सिंगार सजैत रहै छै।
चौसठि सिंगार सजैत रहै छै।
तेहरौनी...।

प्रेम परकीत सोभाव गुण
बरैस-बरैस बेरसैत रहै छै।
तोष-आसु घोड़ि-घोड़ि घोड़
अमृत रस विषपान करै छै।
अमृत रस विषपान करै छै।
तेहरौनी...।


गेल उमरिया......

गेल उमरिया बित फुसिए मायामे
दगल-दाग लगलै कंचन कायामे।
देख-देख दुनियाँ मन भड़छलै
रंग-रूप रस पीबामे
भूक भौक भौकिया-भौकिया
चोकड़ि गेल फल खेबामे।
चोकड़ि गेल फल खेबामे।
गेल उमरिया...।

असिया आस आश मारै छै
कुन्ज निकुंज बोन भड़मै छै
कद-कद कदम गाछ हिलै छै
कृष-कृष कृष्णकेँ पेबामे।
कृष-कृष कृष्णकेँ पेबामे।
गेल उमरिया बित फुसिए मायामे
दगल दाग...।

राधा पाश पकड़ि-पकड़ि
झुलना कृष्ण झुलबै छै।
बात-बाट संग मीलि मिल
एकबट्ट बनि बन झुलै छै।
एकबट्ट बनि बन झुलै छै।
कद-कद कदम गाछ हिलै छै।
कृष-कृष...।
O

कर-करनाम......

डिबिया ऊपर मोमरी इजोत
कर-करनाम करैत एलै।
बनि फूल खेल खेलि
मोमरी मन भरैत एलै।
मोमरी मन भरैत एलै।
कर-करनाम...।

जेहेन तेल तेहेन इजोत
रसि रस राशि रसैत एलै।
कठ-कठगैनी हँसि-हँसि कटि
डिबिया रासि जरैत एलै।
डिबिया रासि जरैत एलै।
कर-करनाम...।

बनि इजोत बन-बन करए
गन्ह हवा गमकैत एलै।
सिक्त-सिक्त शिखा पकड़ि
परिचए अपन धड़ैत एलै।
परिचए अपन धड़ैत एलै।
कर-करनामा...।

पात बीच फूल फूलि फुला
करिया झुमड़ि खेलैत एलै।
बिनु पाते मगर पसीद
रंग-रभस करैत एलै।
रंग रभस करैत एलै।
कर-करनाम...।


मनुख कहाँ......

मनुख कहाँ हम बनि पेलिऐ
मीत यौ, मनुख कहाँ हम बनि पेलिऐ।
नै भेल लूड़ि-बूधि जीबै केर
नै बदलल चाइल-प्रकृति
अपने जेना जे अबैत गेल
तनलिऐ तहिना तानि गीत।
तनलिऐ तहिना तानि गीत।
ताल-मात्र बूझि नै पेलिऐ
मनुख कहाँ...।

चालनि चाल चालि नै ताबे
गुर-चौल कात केना रखबै।
आँकर-पाथर जा नै बेरतै
सुआद-कुआद केना बुझबै।
अखनो धरि से कहाँ बुझलिऐ
मनुख कहाँ हम बनि पेलिऐ।
मित यौ...।

उत्तर-पूब सोपान सजल छै
अकास-पताल पकड़ि बैसल छै।
सत तल जेना उत्तर बसल छै
अतल-पतल सेहो बनल छै।
आइयौ कहाँ से बूझि पेलिऐ
मनुख कहाँ हम बनि पेलिऐ।
मित यौ...।

ढहि केतौ ढनमन केतौ
ढनमन-टनमन होइते एलिऐ
मन मनुआ मन्हुआँ महुरा
अमरीत मिरीत पीबैत एलिऐ।
अमरीत मिरीत पीबैत एलिऐ।
मनुख कहाँ हम बनि पेलिऐ।

जहिया दुनियाँ-जहान जनबै
मनसुख तहिया बनि पेबै।
मनसुख तहिया बनि पेबै।
मित यौ...।

सोँखि-सोँखि सुख-चाइन पेबै
आनन-कानन भड़मैत पेबै।
आनन-कानन भड़मैत पेबै।
जीता जी जिनगानी पेलिऐ
जीता जी जिनगानी पेलिऐ।
मित यौ...।
❍

चान कौसिकीय......

चान कौसिकीय धड़ि धार
डूमि जखन मोती पेलकै।
अड़ैक मन तड़ैप-तड़ैप
अरपित-सँ-तरपित पेलकै।
चन्द्र कौसिकीय धड़ि धार
डूमि जखन...।

लाभ-लोभ ससैर-पसैर
जिनगी धार बहैत पेलकै।
पटे-पट पटि पेट पटिया
गंग अकास हँसैत धेलकै।
चन्द्र कौसिकीय धड़ि धार
डूमि जखन...।

शिखर शीश सरणि सजि
धरती सुनि धारा बनेलकै।
धारे-धार धड़ि धड़िया
सागर-गंगा पटैक पेलकै।
चन्द्र कौसिकीय...।

सगर सागर संग सङोरि
चीत शान्त चेतबैत पेलकै।
कमल नील अकास गढ़ि मढ़ि
सत् सागर अकास फुलेलकै।
चन्द्र कौसिकीय...।

अधर्म-धर्म सुधर्म बनि
सुधर्म-धर्म डेगैत धेलकै
जिनगानी गीत गाबि-गाबि
हरिहर हार चढ़ैत पेलकै
हरिहर हार चढ़ैत पेलकै।
चन्द्र कौसिकीय...।
❍

घट-घट......

घट-घट घाट घटवार बीच
भाँज केना पेबै ओइपार।
रंग-बिरंग घट घाट घटि-घटि
पार केना जेबै ओइपार।
पार केना जेबै ओइपार।
घट-घट...।

कमला-कोसी गंगा-जमुना
बैसल छै घट-घट घटवार।
अपन-अपन रूप-छबि
फेक रहल छै दुनू पार।
फेक रहल छै दुनू पार।
घट-घट...।

धारे-धार मानै छै मनुआँ
मोइन फूटल छै बीचला धार।
घर-घड़िआर बसोवास बनि
चाभि रहल छै दिन-देखार।
चाभि रहल छै दिन-देखार।
घट-घट...।

चढ़ि गाछ गनगुआरि जहिना
किसलय-कलश करए उपकार।
संयम बनि संयासी कहि-कहि
भरमै छै सौंसे संसार।
भरमै छै सौंसे संसार।
घट-घट...।


ओल ओड़ि......

ओल ओड़ि ओलि-ओलि
सभटा कब-कब गाड़ि देलकै।
कन्द केशौर मुँह मुंगबा दऽ
तड़ि-तड़ि तरूआ बनौलकै।
मीत यौ, तड़ि-तड़ि...।

बेधि सिर कुशियार डाभ-कुश
तड़तड़ाइत तर तामि देलकै।
उनटा-पुनटा सुखा-अबा
मुंगरीसँ झोझड़ा देलकै।
मुंगरीसँ झोझड़ा देलकै।
मीत यौ, तड़ि-तड़ि...।

बेवहार विधि सेज सहेज
तर-ऊपरा रंग चढ़ा देलकै।
कचे-बचे फल-फूल लटका
हावामे उड़िया देलकै।
हावामे उड़िया...।

हीय चढ़ि हाथ-पएर पसारि
नापि-नापि मनुखाह बनौलकै।
कंट गुल गुलाब सजि-धजि
कीच कमल कोखिया देलकै।
मीत यौ, कीच कमल...।

कोसा कोख रगड़ि-रगड़ि
तानी-वाणी रंग चढ़ौलकै।
नख-सिख, सिख-नख रचि-बसि
नचनी-नाच नचा देलकै।
मीत यौ, नचनी-नाच...।
❍

निरजन वन......

निरजन वन निरजल पक्षी
गुड़-गृह गुरु गुहारि रहल छै।
सतरंगी-बहुरंगी खेल खलमे
अपन पएर पखाड़ि रहल छै।
अपन पएर पखाड़ि रहल छै।
निरजन...।

सुरूजो एक धरतीओ एक्के
अग-जल हवा सिहकि रहल छै।
खल-खल खलि खलिया-खलिया
टूक-टूक टुकड़ी तोड़ि रहल छै।
टूक-टूक टुकड़ी तोड़ि रहल छै।
निरजन...।

जेहेन जल-थल जतए रहै छै
सिरजन सिर ततए रचै छै।
मन-तन धधकि-धधकि ततए
पछ सरि पंछी बनैत रहै छै।
निरजन वन...।


हरबाह......

जोति हर हरबाह कहै छै
मीत यौ, हर जोति हरबाह कहै छै।

नीचा-ऊपर खेत बनि-बनि
चोटी-ढाल बनल छै।
बून पपीह सु-आती पकड़ि
मृत-अमृत रसपान करै छै।
मृत-अमृत रसपान करै छै।
मीत यौ, हर जोति...।

कीर्त-वीर्त आ प्रकृत
तारा-ऊपरी सिर सजै छै।
पसरि लतरि-लतरि लत्ती जेना
लत-मरदन करैत रहै छै।
लत-मरदन करैत रहै छै।
मीत यौ, हर जोति...।

चोटी पानि टघड़ि-टघड़ि
झील-सरोवर सजैत रहै छै।
बाल-भाल कुशक कलेप
स्थल-मरू बनबैत रहै छै।
स्थल-मरू बनबैत रहै छै।
मीत यौ, हर जोति...।
❍

हर हलक......

हर हलक हलन्तमे
मीर-दोल तेहल बनै छै।
पुर-पुष्कर पुरस्कर
घाट-बाट घटैत रहै छै।
घाट-बाट घटैत रहै छै।
हल-हलक...।

एक-दू तीन चारि चालि
गति इंजीन गाड़ी धड़ै छै।
अन्हाँ-गाहिंस छड़ छूटि
फरकेसँ फीफीआइत रहै छै।
फरकेसँ फीफीआइत रहै छै।
हल-हलक...।

लंक मारि लपकि-लपकि
संगे-संग चलैत रहै छै।
करनी, भरनी, मरनी बीच
धार अगम बहैत रहै छै।
धार अगम बहैत रहै छै।
हल-हलक...।
❍

सालक विदाइ......

भाव-अभाव बिनु केना फुटतै
फुटलोपर लेतै के यौ।
अभाव-भाव सुभाव सुधरि
दर्पण-दर्शन देखौतै यौ।
दर्पण-दर्शन...।

दर्पण साहित्य समाज कहि
दृष्ट दर्शन छिपौलकै यौ।
एना-केना बाट बना
बटोही बाट भोतिऔलकै यौ।
बटोही...।

एक्कैस-बीस समए ससरि
नचिनी नाच नचै छै यौ।
बिनु अखियासे जन-मरम
जिनगी भसान भसै छै यौ।
भाव-अभाव बिनु केना फुटतै
फुटलोपर...।


मोनि मन......

मोने मन उमड़ि-घुमड़ि
बिढ़नी गीत गबैत रहै छै।
सिंह-बाघ धरती धमकि
पानि गोहि मोहैत रहै छै।
बढ़नी गीत...।

घटनी-बढ़नी कहि-सुनि
बढ़नी घटनी करैत रहै छै।
बढ़नी झाँटि झाड़ि-झटिया
मारि बढ़नी मारैत रहै छै।
बिढ़नी गीत...।

सेवा कहि-कहि सभ ठक
ठेका रस पीबैत रहै छै।
मुदा कि, पबिते जिनगीक रस सेवा
स्पद-प्रेम मिलि मीलि गबै छै।
स्पद-प्रेम...।
मोने मन उमड़ि-घुमड़ि
बिढ़नी गीत...।
❍

सेड़ाइते......

मीत यौ, सेराइते सड़ै छै।
हेराइते हरै छै, डेराइते डरै छै।
मीत यौ, सेराइते सड़ै छै।

भात-बात बासि बसिया
बसिया-लसिया रूप धड़ै छै।
बसिया-टटका कहि सुनि-सुनि
निसाँ नसा चढ़बैत रहै छै।
निशा नसा चढ़बैत रहै छै।
मीत यौ, सेराइते...।

वाह रे मन, इच्छित जीवन
चाहक हाल बुझैत रहै छै।
पानि कहि सेराएल चाह
हटा कात फेकैत रहै छै।
हटा कात फेकैत रहै छै।
मीत यौ, सेराइते...।

मीत यौ, सेराइते सड़ै छै।
हेराइते हरै छै, डेराइते डरै छै।
❍

दिन-रातिक......

दिन-रातिक आँखि मिचौनी
अन्हरा-दिठड़ा खेल खेलै छै।
दिन-सुदिन कहि सुना-सुना
निसभरि राति रमैत रहै छै।
निसभरि राति रमैत रहै छै।
अन्हरा-दिठरा...।

दिना दोख घिसिया-तिरिया
नित: नोन नश-नश भरै छै।
अधा जिनगी उलबा दोला
अदधे आँखिक बीच उड़ै छै।
अदधे आँखिक बीच उड़ै छै।
अन्हरा-दिठरा...।

दिठड़ा डेग बढ़ि-बढ़ि बढ़ा
लपकि बाँहि अन्हरा पकड़ै छै।
पकड़ि बाँहि नूनू-दूनू
राति काटि प्रभाती गबै छै।
राति काटि प्रभाती गबै छै।
अन्हरा दिठड़ा...।


अबिते आँगन......

अबिते आँगन अलकि-झलकि
दोग-सान्हि देखए लगै छै।
दोगे-दोग दौड़ दूर देखि
अलकक चान दौड़ए लगै छै।
अलकक चान दौड़ए लगै छै।
अबिते आँगन...।

सोनि-सानि शून सन्हिया
उगडुम डुमउग करए लगै छै।
उगि-डूमि डुककुनिया मारि-काटि
चितंग चेल चेतबए लगै छै।
चितंग चेल चेतबए लगै छै।
अबिते आँगन...।

जहिना लहास धार धरा
चीत-पट परिचय करए लगै छै।
अलकि-पलकि अलि-अल कहि
अलकक चान देखए लगै छै।
अलकक चान देखए लगै छै।
अबिते आँगन...।


समाज सजल......

समाज सजल छै छिपाड़-उकट्टी
छीप-उकठपना बेवसाय बनल छै।
रंग-बिरंग समाज गढ़ि-मढ़ि केर
रंग-रंग छीप सदि कटैत रहै छै।
रंग-रंग छीप सदि कटैत रहै छै।
समाज सजल...।

आस-वियास बनिते जहिना
चोर-माखन कृष्ण कहै छै।
गोप-गोपी बीच उमैक
कहि उमैक उकठपन करै छै।
कहि उमैक उकठपन करै छै।
समाज सजल...।

भावो लोक तहिना भावए
मारि सेन्ह कटिया कहै छै।
शास्त्री, शब्दशास्त्री कहि
कर्ता-धर्ता ब्रह्म कहै छै।
मीत यौ, कर्ता...।
❍

सभ मिलि......

सभ मिलि हमरा बाड़ि देलकै।
अपना समाजसँ टारि देलकै।
सभ मिलि हमरा बाड़ि देलकै।

बनि-बनि बदलि-बदलि
वारिस वर्ष मेघ कहौलकै।
माटि-छोड़ि बालु पकड़ि
अपने मुँह अपने भरलकै।
अपने मुँह अपने भरलकै।
मीत यौ, अपने मुँह अपने भरलकै।
अपना समाजसँ...।

बाड़ि चोरवत्ती देख अन्ह
अन्है जलधर बसौलकै।
बास बासुकि कहि-कहि
सिर शिव मलि मढ़लकै।
मीत यौ, सिर शिव मलि मढ़लकै।
अपना समाजसँ...।

अपना समाजसँ टारि देलकै।
चास-बास-अगवास बनि वन
सिर आगू पीड़ सजौलिऐ।
पंच-एकक फन्द फड़ि फल
मेव पंच प्रसाद बँटलिऐ
मीत यौ, मेव...।


सोच सकार......

सोच सकार हकारि-हकार
नैन-उपनैन बुलि-बुलि बँटै छै।
मानि-मन बानि-बनि बन
नकार-सकार सकारि कहै छै।
सोच सकार...।

शब्द-शक्ति पकड़ि भक्ति
कर्म-धर्मक चारा छिटै छै।
शब्द-कर्म आकि कर्म-शब्द
हकारि-हकारि हकार कहै छै।
सोच सकार...।

चालि-चक्र पकड़ि वक्र
सिनेह सिक्त अर्जुन धबै छै।
सकारि-सकार बिलहि हकार
आनन नन कानन पबै छै।
मीत यौ, आनन नन कानन पबै छै।
सोच सकार...।
❍

(नव वर्ष २०१३क शुभकामना...)

अबिते अगहन......

अबिते अगहन ओस ओसा
धड़-धरती धड़ए लगै छै।
चर-चाँचर आँचर पकड़ि
उजाहि सिल्ली चरए लगै छै।
उजाहि सिल्ली चरए लगै छै।
अबिते अगहन...।

आँचर धन चाँचर पकड़ि
गरि गारा गाबए लगै छै।
अकुल-सकुल रभसि राग
राति-दिन गाबए लगै छै।
राति-दिन गाबए लगै छै।
अबिते अगहन...।

जेकर छेलै तेकर गेलै
अपन कहि हहकारि कहै छै।
धनबल मनबल सिर चढ़ि
राग-विराग अलापि कहै छै।
अबिते अगहन ओस ओसा
धड़-धरती धड़ए लगै छै।
अबिते अगहन...।


उपजल खेत......

उपजल खेत जजाति जहिना
मुड़हन, दोहन तेहन कहै छै।
कोणे-काणी हिया-हिया
रखा-राखी सिर सैंत सजै छै।
रखा-राखी सिर सैंत सजै छै।
उपजल खेत...।

बोन-बाध बिनु रखा राखी
निर्जन निरबल कहए लगै छै।
आलत-पालत फालत बनि
परती-पराँत कहए लगै छै।
परती-पराँत कहए लगै छै।
उपजल खेत...।

मरल धार चहि चहटि पेट
मूर्द-घाट सिरजए लगै छै।
बजारि बज्र परतीओ तहिना
मूड़धन धाम बनबए लगै छै।
उपजल खेत जजाति जेनाही
मुड़हन, दोहन तेहन कहै छै।
मुड़हन, दोहन तेहन कहै छै।
उपजल खेत...।
❍

धूल चरण......

धूल चरण चरणामृत कहि
दर्शन कवि दरसबैत एला
रज सिर सहज सहेजि सजि
गुड़ गोसाँइ सिखबैत एला।
गुड़ गोसाँइ सिखबैत एला।
धूल चरण...।

हर क्षण हर पल पकड़ि-पकड़ि
जीअन-मरण जोड़बैत एला
चीत चेता चकोर चितबन
आँखि-फाँड़ि फड़कैत एला
फाड़ि-आँखि फड़कैत एला।
धूल चरण...।

जीता जी गुहाँ-भत्ता
मर्म मरण महि महियबैत एला
चरण पकड़ि चन चान चना
जल-थल नभ नमबैत एला
जल-थल नभ नमबैत एला
धूल चरण...।

चरण-शरण कहि शरणागत
रूप रोबोट धड़बैत एला
जीवन मुक्त मुक्ति जिनगीक
नाओं राम रटबैत एला।
नाओं राम रटबैत एला।
धूल चरण...।
O

उनटन......

उनटन उबटन सदि-सदि बनि
बोध बाल धड़ धड़ैत एलै
अदलि-बदलि रीति-नीतिकेँ
सून-शून्य सुनबैत एलै।
मीत यौ, सून-शून्य सुनबैत एलै।
उनटन उबटन...।

दस-बीस, तीस तीन तेबर
जेबर बनि-बनि सजैत एलै।
नबे-अस्सी खस्सी खखसि
खड़-खड़ाइत खसैत एलै।
खड़-खड़ाइत खसैत एलै।
उनटन उबटन...।

पछिया पछ पकैड़ पछुआ
पूब-पूब पुपुआइत एलै
डेन पकड़ि वामा-दहिना
पाट धोबि पटकैत एलै।
पाट धोबि पटकैत एलै।
उनटन उबटन...।



जान विचार......

जान विचार अबिते अंगना
जनदार बास कहबए लगै छै।
कर्म-शब्द रचि-रचि बसि-बसि
रूप कर्म सजबए लगै छै।
रूप कर्म सजबए लगै छै।
जान विचार...।

भाव कहै छै अभाव शब्द
कर्म गवाही दइत कहै छै।
करता-धरता जे जन जान
साधि-साधि मंगल गबै छै।
साधि-साधि मंगल गबै छै।
जान विचार...।

कर्म-धर्म कि शब्द-धर्म
आँखि मिचौनी खेल खेलै छै।
तिरछा-तिरछा तीन-तेबाट
विरीछ-तिरिछ रोपए लगै छै।
जान विचार...।



चालनि-सूप......

चालनि-सूप चालनि एलौं
भाय यौ, सूप-चालनि चलनि एलौं।
कखनो घाट कखनो अगम
बीच पानि चलिआइत एलौं।
पकड़ि पाँखि सुगना गीधक
चाल चील चिलिआइत एलौं
भाय यौ, चालनि...।

कखनो सिमटी बालु बनि
संगे-संग पथराइत एलौं।
दोखरा-तेखरा कखनो बनि
मुरही संग भुजाइत एलौं
भाय यौ, मुरही संग भुजाइत एलौं।
चालनि-सूप...।

जल्ला सिर गाछ पकड़ि
बाँस जाल जलिआइत एलौं।
अल्हुआ-सुथनी फल पकड़ि
मरिया-अरिया फेकाइत एलौं
भाय यौ, मरिया-अरिया फेकाइत एलौं।
चालनि-सूप...।

करनी-धरनी बढ़नी बनि
अंगने घर बहराइत एलौं।
गुड़ा-खुद्दी खखरी बनि
गुडचल्ला-चला चलाति एलौं
भाय यौ, गुड़चल्ला चला चलाति एलौं।
चालनि-सूप...।


मरम देखि......

मरम देखि मर्माहत होइ छै
मर्म देखि मर्माहत होइ छै।

डाह मरम मरण देखि
मर्माहत टुक-टुक तकै छै।
तारन-मारन देखि-देखि
तिलमिला तिल-तिल खसै छै।
तिलमिला तिल-तिल खसै छै।
मरम देखि...।

मर्मक आहत देखि-देखि
घात-अवघात हृदए लगै छै।
तइर तीर तीड़ि-तीड़ि
सगर देह सकबेधल देखै छै।
सगहर देह सकबेधल देखै छै।
मरम देखि...।

मर्म मारि सुमारि छोड़ि
कुमारि मारि मारैत रहै छै।
अढ़ि-मोड़ि ऐँठि रस्सी
बाट-घाट सकबेधल देखै छै।
बाट-घाट सकबेधल देखै छै।
मरम देखि...।

मर्म एक दुनियाँ बसि बसा
जिनगीक पाठ पढ़ैत रहै छै।
दोसर मरम मरण बनि-बनि
भूत-राकश टहलैत रहै छै।
भूत-राकश टहलैत रहै छै।
मरम देखि...।
❍

वेद-भेद......

वेद-भेद रंग रभस्य
पबिते रस रहस्य भरै छै।
भेद भेदिया भेदि-भेदि
तल-ऊपर चक्की गढ़ै छै।
तल-ऊपर चक्की गढ़ै छै।
वेद-भेद...।

भेदि भेद भेदिया भभा
हँसि-हँसि सूरतान भरै छै।
शून-सुनि कुभेद-भेद
मने-मन सिरजैत रहै छै।
मने-मन सिरजैत रहै छै।
वेद-भेद...।

मन-मन्वतर विचारि कुचाड़ि
भेदि भेद भेदैत रहै छै।
विचारि बीच कुचाड़ि-सुचाड़ि
शक्ति शिव सुरतानि कहै छै।
शक्ति शिव सुरतानि कहै छै।
वेद-भेद...।

करम-धरम आकि धरम करम
वेद-भेद भेदिआए कहै छै।
तत्व हीन उकटि-पकटि
शूरधाम सूर-सुर चढ़ै छै।
शूरधाम सूर-सुर चढ़ै छै।
वेद-भेद...।


भक-इजोतमे……

भक-इजोतमे पड़ल छी
भयार यौ, मीत यौ, भाय यौ
भक इजोतमे पड़ल छी।

खेती मुँहक सुख-सुहनगर
साड़ी अरिअर आस चढ़ै छै।
उक्खरि बीट समाठ सीस बनि
गर्भ संक्रान्ति भरैत रहै छी।
भक-इजोत…।

भुक-भुक भुकजोगनी टहलि
इजोत-अन्हार करैत रहै छै।
थाहि-थाहि थोपड़ी थपथपा
टाहि टहाका मारि कहै छै।
भक-इजोत…।

कातिक कंत देखैले
कलहंत कण्ठ कलपैत कहै छै।
कोकिल कंठ तानि मधुर
कौआ-कागा सिर चढै छै।
भक-इजोत…।

जेकरा लूड़ि छै घर बनबए
चाहे घास चाहे ठौहरी।
बोली-वाणी कुसि कुसिया
हँसैत वंश दौड़बैत चलै छै।
हँसैत वंश दौड़बैत चलै छै।
भक-इजोत…।
❍

जेठुआ गरे......

जेठुआ गरे गर लगिते
बनि अन्हर-बिहाड़ि धड़ै छै।
बिहरन समए बनि-बनि बना
विरह-वेदना कहए लगै छै।
जेठुआ गरे...।

चैत-बैशाख जेहन तपस्या
हलचला धड़ती सिंचै छै।
सम-समए समेटि सिजति
हाले हल युग-धर्म कहै छै।
हाले हल युग-धर्म कहै छै।
जेठुआ गरे...।

जन-जनक जेना जनक
मिथिला काम-धाम कहबै छै।
देश-देशान्तर रथी महा
सिख सिर सजबैत रहै छै।
सिख सिर सजबैत रहै छै।
जेठुआ गरे...।

बट-कट कटि बट वृक्ष
जिनगी बाट धड़ैत रहै छै।
राग-विराग तजि तियागि
चोंचिया चोंच हंस भरैत रहै छै।
चोंचिया चोंच हंस भरैत रहै छै।
जेठुआ गरे...।

सर-नर रस्ता पकड़ि-पकड़ि
श्रृंग-श्रृंगी श्रृंगार करै छै।
रथी-महारथी जगमे
पुत्र-यज्ञ श्रृंगी कहबैत रहै छै।
पुत्र-यज्ञ श्रृंगी कहबैत रहै छै।
जेठुआ गरे...।

-

निर्जन वन......

निर्जन वन निर्जल पक्षी
गुड़-गृह गुरु गुहारि रहल छै।
सतरंगी सतसंगी कहि-सुनि
अप्पन पएर पखारि रहल छै।
निर्जन वन...।

एक सूर्य धरतीओ एक
अग्नि-वासु जल सिक्त करै छै।
तूर-तूर तोड़ि तुरिया तूर
तक-तक तकली काटि रहल छै।
तक-तक...।

जइसन जतए जल-थलिक गति
सिरजन सिर ततए तेहन चलै छै।
तन-मन-धन धरम ततए
हँसि-हँसि पक्षी हंस हँसै छै।
निर्जन वन...।

हंसा बनि-हंस हँसि-हँसि
सत साखी मंगल रचै छै।
निर्जन वन निर्जल पक्षी
गुड़-गृह गुरु गुहारि रहल छै।
गुड़-गृह...।
❍

छगुन्तामे पड़ल छी.....

छगुन्तामे पड़ल छी
भाय यौ, छगुन्तामे पड़ल छी।
छग-छगा, छक-छका-छक-छका
चालि कुबुधि सुबुधि देखै छै।
छक-छका मेरिचाइ जेना
ड़ब-ड़बा जीह-ठार लगै छै।
भाय यौ, ड़ब-ड़बा...।

सिख-सीखि सिखा-सिखा
सजि सिर सिरिस कहै छै।
कर्ता-धर्ता-भर्ता भजार
सीस चढ़ि सिरमतिया कहै छै।
कलपि देखि कलपै छी
भाय यौ, कलपि देखि कलपै छी।
छगुन्तामे...।

भरनी-तानी भरि ताना-वाना
दिन-राति मखड़ैत रहै छै।
सुता सुत तानि ताना भरना
लट्टा-कट्टा सजैत रहै छै।
देखि-देखि करूआइ छी
भा यौ, देखि-देखि करूआइ छी
छगुन्तामे...।

सूत फेकि सुतियार बनि
रंग-बिरंग जाल बुनैत रहै छै।
इचना-पोठी संग रौह-भाकुर
ग्राह-गोहि गोहियाइत रहै छै।
मरमसँ मरमाइ छी
भाय यौ, मरमसँ मरमाइ छी।
छगुन्तामे...।


सुआगत की लए......

सुआगत की लए करब अहाँक
सुआगत की लए करब अहाँक।
नै अछि एको विधि बेवहार
धएल धर्मक चरचे की करब।
सर-समांग एको ने देखै छी
तइओ सुआगत करबे-करब।
असे नै बिसवास कहै छी
की लए सुआगत करब अहाँक
सुआगत की लए करब अहाँक।
हेरल-हेराएल भोथिआएल बोन
चीन-पहचीन उड़िया गेलै
कीच कमल कोशिया कुरबा
जोति जल जोतिया गेलै।
आसा-आस असिया अलिसा
जुड़ा-जुड़ा कहै छी
सुआगत की लए करब अहाँक।
इच्छा आशा सखी-सहेली
सजि फुलडाली संग-सुसंग
आस मारि बेआस मरि-मरि
छी समर्पित अंग-प्रत्यंग।
भव-भार भरि-भरि भरै छी
सुआगत की लए करब अहाँक।
सुआगत की लए...।
❍

('विदेह' सम्मान समारोह- २०१३क अवसरिपर)

सुआगत अपनेक......

सुआगत अपनेक करै छी
अभिगत अपने सुआगत करै छी।
गुरु-गरु बड़ सिर सिरजन बर
हारि-हीय हिहिया कहै छी
सुआगत अपनेक करै छी।
नैन-बैन संग, बैन-चैन संग
चैन-मैन संग, मानि सानि कहै छी
तथागत,
अपनेक सुआगत करै छी।
असि आस निरास संग
बास बसि बिसवास कहै छी।
हम-अहाँ, अहाँ हम
गोप-गोपाल गोपी कहै छी।
सुआगत अपनेक करै छी
अभिमत,
सुआगत अपनेक करै छी
सुआगत...।
❍

('विदेह' नाट्य उत्सव- २०१३क अवसरिपर)

वृद्ध केना......

वृद्ध केना भेलिऐ
आँइ यौ बौआ
वृद्ध केना भेलिऐ।
बाटे बहकि-बहकि
धक बाढ़ि हेललिऐ।
वाम-दहिन भाँज बिनु
बूझि सूर भड़लिऐ।
वृद्ध केना...।

बसि बास पीपही गछिया
रिआइते खिया खिऔलिऐ
निमोछा-निमोछी कहि सुनि
आम-कटहर कहौलिऐ।
बौआ, आम-कटहर कहैलिऐ।
वृद्ध केना...।

सात दिन सातो जनम
बुझियो नै कहाँ पेलिऐ।
तेहने आसो असा
पेब-पेब झखौलिऐ।
भाय यौ, पेब-पेब झखौलिऐ।
वृद्ध केना...।

वृद्ध-सँ-समृद्ध कहबए
समृद्ध समाज सेज सजैए
साज सिंगार सोल्हो कला
रीत वसन्त सूर-तान भरै छै।
बुझिओ कहाँ पेलिऐ।
भाय यौ, बुझिओ कहाँ पेलिऐ।
वृद्ध केना...।

सभ चाहए वसन्ती-वसन्त

धक्का बुढ़ाढ़ी खाइत एलिऐ।
गजुआ-बँझिया बाँझ-बाँझीन
लस-लस्सा बनैत रहलिऐ।
बौआ, लस-लस्सा बनैत रहलिऐ
वृद्ध केना...।
❍

समए केर......

समए केर भूचालिमे
जिनगी बोहिया गेल।
जी-वन वन जीवन बीच
बोहिआएल बाट बटिया गेल।
समए केर...।

सजल-बसल मन मनिक
विष-विसाइन बनैत गेल।
उजड़ि-उपटि झाड़-झपटि
सखुआ शंख रोपा गेल।
समए केर...।

घुमि-ताकि जखन पाछू
मड़िआएल मेघ पकड़ा गेल।
हरल-मरल बाट-घाट
घटिया घाट घटा गेल।
समए केर...।

पकड़ि पएर चारिम पहर
अस्ति-चल-अस्ति भेटैत गेल।
घेरि-घेरि घैंट घैंघिया
दुखरा-दुख कहैत गेल।
समए केर...।


भगवती गीत

एना किए बनेलौं हे मइये
एना किए बनेलौं।
दुनियाँ रचै-बसैले
दुनियाँ अहाँ बनेलौं।
भूमा भोग भगा-भगा
माइयक कोर छोड़ेलौं।
हे मइये...।

सूखल रोटी अल्लू सनि सानि
दिन-राति किए खुएलौं
बाँकी भगा-भगा कऽ
रोग-वियाधि पठेलौं
एना किए...।

जामंतो फूल-गाछ सिरजि
जामंतो फूल-फल सजेलौं
चीन-पहचीन विस बिसरा
अगुआ थारी खिंचलौं, हे मइये
एना किए...।

बानि वहारि नैन दहाड़ि
बनवासी बना पठेलौं।
कलपि-तड़पि तैयो कहै छी
हीआ जोगि जोगेलौं हे मइये
एना किए...।


आनक बोझ......

आनक बोझ उठाबै खातिर
अपनो बोझ भड़कि गेलै।
दबि-दबि, उनरि-उनरि
जुन्ने बीच ससरि गेलइ।
मीत यौ, जुन्ने बीच ससरि गेलइ।
अपनो...।

पसरल पानि धार तरहत्थी
बीतल-अतल बनैत गेलै।
सिर ससरि-ससरि सर
अपनो पएर पिछड़ैत गेलै।
मीत यौ, अपनो पएर पिछड़ैत गेलै।
अपनो...।

रहलै ने सुधि-बुधि मिसिओ
मोसिआनी बदलैत गेलै।
उज्जर कागज-कलम कहि-सुनि
आखर कारी अंकड़ैत गेलै।
मीत यौ, आखर कारी अंकड़ैत गेलै।
अपनो...।

घूरि घूर घुड़लै जखन
मारि मेघ मारैत गेलै।
कटि कोदारि कोदरकट्टा भऽ भऽ
रूप अमावस धड़ैत गेलै।
जुन्ना बनि ससरैत गेलै।
अपनो...।


अड़कन-मरकन

अड़कन-मरकन बीछि-बीनि
सूर-तान तनैत एलौं।
कूह केना फटै अमावस
भोर-साँझ कहैत एलौं।
भोर-साँझ कहैत एलौं।
अड़कन...।

परात-पराती सान सानि
लहरि स्वर लहरैत एलौं।
रौद-बसात अङेज-अंग
ता-थइ नाच नचैत एलौं।
ता-थइ नाच नचैत एलौं।
अड़कन...।

तम-तमाएल परती-परात
रस-रसा रसाइत एलौं।
घोंटे-घोंट घेँट घोंटि
रस अमृत पीबैत एलौं।
रस अमृत पीबैत एलौं।
अड़कन...।

मृत-अमृत सटल-हटल
रंग-रास रसबैत एलौं।
जाबे बरतन ताबे करतन
करम-धरम बुझबैत एलौं।
करम-धरम बुझबैत एलौं।
अड़कन...।


हाल-बेहाल

हाल-बेहाल नेहाल बनिते
प्रेमी प्रेम छोड़ैत एलै।
पाबि वसन्त भोम्हरा जेना
रस अन्हार धड़ैत एलै।
रस अन्हार धड़ैत एलै।
हाल-बेहाल... ।

पुन्ज पुष्प परमलील बनि-बनि
राग-विराग जपैत एलै।
जोग-भोग जोगिया-भोतिया
सजि संबन्ध सजैत एलै।
सजि संबन्ध सजैत एलै।
हाल-बेहाल... ।

जोर बाजि ललकारि ललकि
शुम्भ-निशुम्भ रचैत एलै।
समए शुभ-अशुभ काल कहि-कहि
समए-काल खेलैत एलै।
समए-काल खेलैत एलै।
हाल-बेहाल... ।

बनिते काल समए कलि कलिया
अपराजी रंग कहैत एलै
रंग संग लत्ती लत-लतड़ि
फूल रंग बदलैत एलै।
फूल रंग बदलैत एलै।
हाल-बेहाल... ।
❍

आजादीक उमंग......

आजादीक उमंग उमकि
घाटे-बाट छिछिया गेलौं।
सत्त-समुद्र पहाड़ बीच सत्त
डेगे-डेग बौआ गेलौं।
भाय यौ, डेगे-डेग बौआ गेलौं।
घाटे-बाट...।

तल मोड़ि तम तमाएल पताल
छुबूधि भऽ छुछिया गेलौं।
आजादीक उत्साह उमकि
दिने-राति भोतिया गेलौं।
भाय यौ, दिने-राति भोतिया गेलौं।
घाटे-बाट...।

प्रशान्त-शान्त ललिया कलिया
जोर पकड़ि डिरिया गेलौं।
डिरियाइत पताल-अकासमे
डोह डाबर डीह कहेलौं।
आजादीक उत्साह उमकि
घाटे-बाट बौआ गेलौं।
भाय यौ, घाटे-बाट...।

बोन-बोनैया गीत गाबि
बनि शिकारी वीन बजेलौं।
मोड़ि मनुआ तोड़ि जिनगी
दिने-देखार बहकैत गेलौं।
दिने-देखार बहकैत गेलौं।
बाटे-घाट...।

ठाढ़े-ठाढ़ ठिठु ठिठुरि-ठिठुर
रौद पाबि लू-लुआ गेलौं।
बनि बरखा बरसाती बनि
तरे-ऊपरे दहा गेलौं।

आजादीक उमंग उमकि
घाटे-बाट बौआ गेलौं।
भाय यौ, घाटे-बाट...।
❍

(गणतंत्र दिवस- २०१३क अवसरिपर...)

बुधिए भोतिया......

भोथ बुधि भोतिया गेलै
भाय यौ, कोकनल जड़ि रोपा गेलै।
बुधिए भोतिया गेलै।

जेना-जेना जड़ि जड़ जड़िया
कोन-कान तहिना कोना गेलै
सुख-दुखक बीचमानि मानि
दुखिया दुख-सुख सुखा गेलै
दुखिया दुख-सुख सुखा गेलै
भाय यौ, बुधिए...।

अपन कि परिवारो तेहने
फूले बीआ छीटा गेलै
बनि माली मलकान पकड़ि
भागे-भाग भोतिया गेलै।
भागे-भाग भोतिया गेलै।
बुधिए...।

घरे-घर सरे-सर समाज
पेन कट्ट लोटा पसरा गेलै
जड़ि कट लट छिड़िया गेलै
दइते मुँहमे पानि जहाँ
धरती बीच छिड़िया गेलै।
भाय यौ, धरती बीच छिड़िया गेलै।
बुधिए...।

जेहने वखार गोनू झाक
पेनकट खाधि खुना गेलै।
देहे-मोने पसरि-पसरि
भोथाएल बुधि भोथा गेलै।
भाय यौ, भोथाएल बुधि भोथा गेलै।
बुधिए...।

नीचाँ-ऊपर सुत सुता-सुता
पटिया पाट पटिया गेलै।
चीत-पट, पट-चीत सुत-सुता
रस-जिनगीक सोंखा गेलै।
जिनगी रस सोंखा गेलै।
जिनगीए हरा गेलै।
भाय यौ, जिनगीए हरा गेलै।
बुधिए...।
❍

घर-घरा......

घर-घरा घर घड़ा घैल
पकड़ि पग घैलची बैसल छै।
जल बीच जल धारा बनि
तन-मन बीच जलदार बहै छै।
तन-मन बीच जलदार बहै छै।
पग पकड़ि घैलची...।

बिनु पएर बिनु सीर सजि
दिवा राति बस-बस रहै छै।
मग्न भऽ निमग्न बनि-बनि
संग समीर शीतल बनल छै।
संग समीर शीतल बनल छै।
पकड़ि पग घैलची...।

ठोप ठोकि पन बनि-बना
आगू बढ़ि जलधार बनै छै।
अपन पथ पग-पग पकड़ि
धार कमल खिलबए लगै छै।
धार कमल खिलबए लगै छै।
तन-मन बीच...।

बनि धार धर धरती कटि
ओर-छोर जिनगी बनबै छै।
उतर-दछिन दिस दिशा पकड़ि
हँसैत जिनगी धार बहै छै।
हँसैत जिनगी धार बहै छै।

कमला गीत गाबि-गाबि
झल-झील सागर कमल सजै छै
नील स्वर नीलकंठ भऽ
नल-नील अकसि अकास उड़ै छै।
नल-नील अकसि अकास उड़ै छै।
तन मन बीच...।

❍

जा बौआ......

जा बौआ नीन नइ तोड़ब
कियो ने जिनगी देख पेबै।
जिनगी बिनु जिनगानी ओहए
कोन सुर मुहैँ गाबि पेबै।
कोन सुर मुहैँ गाबि पेबै।
जा बौआ...।

नइ जा पुरूखपना पुरुखमे
नीन तोड़ि बटबानि गेबै।
तकितो भक भकुआइए रहि
जीता जी जड़ाइते गेबै।
जीता जी जड़ाइते गेबै।
जा बौआ...।

समर भूमि संसारमे
खाड़ी तीन सजल पेबै।
देव-दानव मानव कहि
पशु चढल पबैत पेबै।
पशु चढल पबैत पेबै।
जा बौआ...।

टुटैत नीन जेना बगरा-बुगरी
उङि रजधानी पबैत पेबै
राजमाता बनि-बनि, सजि-सजि
साड़ी अकास सुखैत पेबै।
साड़ी अकास सुखैत पेबै।

जागू-जागू, तोड़ू-तोड़ू
भक-भौक जिनगीक बाट पेबै
बोले-बोल घोर घोरि-घारि
कटैत जिनगीक बाट पेबै।
कटैत जिनगीक बाट पेबै।
जा बौआ...।

लत-लत लत्ती......

लत-लत लत्ती लप लपकि
बिनु पएरे दौगैत चलै छै।
गरे-गर गोर गाड़ि-गाड़ि
आगू उठि अँखिमुनी तकै छै।
आगू उठि अँखिमुनी तकै छै।
लत-तल लत्ती...।

उठ उठा ऊपर उप-उपकि
दस दिस जिनगी पबए चाहे छै।
कर-कड़चीक सहयोग पाबि
घर-मचान गृहबास करै छै।
घर-मचान गृहबास करै छै।
लत-तल लत्ती...।

हँस हँसि आँखि फड़-फड़का
केतौ पात केतौ फूल सजै छै।
तँए कि केतौ भद-भेद-कुभेद
फूलपात देव शीश चढ़ै छै।
फूलपात देव शीश चढ़ै छै।
लत-तल लत्ती...।



पीड़ित रीति......

बिनु तीत परतीत केना
पीड़ित रीति बानि बनि पेतै।
गर-गरा गरदनि पकड़ि
सुरीति रीति केना गाबि पेतै।
सुरीति रीति केना गाबि पेतै।
पीड़ित रीति...।

रस तीत बीस बाणि पकड़ि
जी जिनगी बँटाइत जेते।
हंस जेना दू-पन निरा
पी-पीबि दूध पानि फेकतै।
पी-पीबि दूध पानि फेकतै।
पीड़ित रीति...।

बाट पकड़ि रति रीत रीत
मंदिर मनक कपाट धड़ेतै।
हरक पट पाट पकड़ि-पकड़ि
नासा-आसा संगे चलेतै।
नासा-आसा संगे चलेतै।
पीड़ित रीति...।

रति देख रीतराज पकड़ि
मसिया मसि-मसि मास कटेतै।
कहियो शिशिर शरद कहियो
मील-मिल बारहो मास गेतै।
मील-मिल बारहो मास गेतै।

रंग-बिरंगक चान सुर्ज
संगे-संग दिन-राति चलेतै।
अपन-अपन बोलिये-वानिये
पार्वतीक शिव पार पेतै।
पार्वतीक शिव पार पेतै।
बिनु तीत...।

○

अकार-सकार......

सुखाएल धार सुखा-सुखा
अकार-सकार धेने रहै छै।
धड़ि-धार धरा मन कहियो
समरीत सुख पेने रहै छै।
समरीत सुख पेने रहै छै।
अकार-सकार...।

घटि-घट माटि बालु भलहिं
माटि-माटिक कहैत रहै छै।
पातक पानि पता केने
समए संग छिछिया कहै छै।
समए संग छिछिया कहै छै।
अकार-सकार...।

धड़ धड़ि धरती पग पकड़ि
बल-बलिदान होइते रहै छै।
तँए कि पानिक प्रीत बिसरि
धड़ा नाओं धेने रहै छै।
धड़ा नाओं धेने रहै छै।
अकार-सकार...।

बेसिया बेस अदलि-बदलि
जीबंत जीन जीवन कहै छै।
तँए कि अटल प्रेमीक प्रेम
शक्ति संकल्प डिगब कहै छै।
शक्ति संकल्प डिगब कहै छै।
अकार-सकार...।

करम अपन करतब अपान
सुख सोपान सुखबाट कहै छै।
चित्रकूट सुग्गा पढ़ि-पढ़ि
सुखाएल धार टपैत कहै छै।
सुखाएल धार टपैत कहै छै।

अकार-सकार... ।



मंगनी-चंगनी......

टेनशन बीच पड़ल छी
मीत यौ, बीच टेनशन पड़ल छी।
मनक ताप संताप बनि-बनि
मने मन गमकै-महकै छी।
भीतर-बहार गठजड़ि जोड़ि
सीर टेनशन सनियाए लगै छी।
सीर टेनशन सनियाए लगै छी।
टेनशन बीच...।

समए संग-संग पेब पबि
कोढ़ी-बाती फूल सजै छी।
अबैत हवा पट पीठ पाटि
टेनशन टनटनाइत कहै छी।
टेनशन टनटनाइत कहै छी।
टेनशन बीच...।

जाबे विचार संग नहि
हसि हंस हँसि गाबि कहै छी
जखनि कजविचार संग मीलि
सखी-बहिनपा कहि कहै छी।
सखी-बहिनपा कहि कहै छी।
टेनशन बीच...।

ताबे गोटी लाले रहत
जाबे कछाँटि नइ देखै छी।
टेनशन भैया अहीं कहू
टेनशन भऽ टेनशन कहै छी।
टेनशन भऽ टेनशन कहै छी।
टेनशन बीच...।
❍

आन्ही-अन्हर......

अन्हर केर अन्हार टपैमे
आन्ही-अन्हर झेलए पड़तै।
झेल-झेल झालड़ि झल-झाड़ि
नागिन राग अलापए पड़तै।
नागिन राग अलापए पड़तै।
आन्ही-अन्हर...।

रातिक राति अन्हार वाणि
गहे-गह गहि गहियबए पड़तै।
रेहे रेह राही राह रहि
राहगीर राह बनाबए पड़तै।
राहगीर राह बनाबए पड़तै।
आन्ही-अन्हर...।

जेहेन रीत तेहेन इजोतमे
दीन देखार देखाबए पड़तै।
वेद-कुभेद भेद भेदि भेद
रुचि वेद पंच पचाबए पड़तै।
पंच वेद रुचि पचाबए पड़तै।
पंच वेद रुचि पचाबए पड़तै।
आन्ही-अन्हर...।

जएह अन्हार सहए इजोत
कल्पना सपना देखए पड़तै।
सपना तँ सपने रहि-रहि
कल-कल कल्पना करए पड़तै।
कल-कल कल्पना करए पड़तै।
अन्हर केर अन्हार टपैमे
आन्ही-अन्हर...।
❍

सुफल काज......

सुफल काज जेते जिनगीमे
सफल-सुफल कहबए लगै छै।
फले-फल वन-वन बनैत
बगिया बाग बनए लगै छै।
बगिया बाग बनै लगै छै।
सुफल काज...।

पूस पूसौंट कहि-कहि सुनि
मसिया फल पेबए लगै छै।
अधिया हस्त अधिया अदरि
पख मसिया पेबए लगै छै।
पख मसिया पेबए लगै छै।
सुफल काज...।

पखिया पख पखेरि-पखारि
सतिया सात सतिया लगै छै।
अंठिया आठिक आड़ि बनि
हपता-सपता बनए लगै छै।
हपता-सपता बनए लगै छै।
सुफल काज...।

काम-धाम की धाम-काम
मन मंदिर मनबए लगै छै।
अगैल-बगैल लतैड़ फैड़
अमरलत्ती कहबए लगै छै।
अमरलत्ती कहबए लगै छै।
सुफल काज...।

छुच्छ हाथ मुँहमे जहिना
किछ ने दऽ पाबि पबै छै।
वेद भेदन भेद ने बूझि
कर्मक फल पबैत रहै छै।
कर्मक फल पबैत रहै छै।

सुफल काज...।
❍